

पू. मुनुवां भैया को पुराना

174

आपका पत्र मिला था। पर उत्तर देने की सोच
तो ही रह गई। आपका द्वार तो हमेशा ही मेरे लिए
खुला रहा और खुला है, यह मुझे भली भांति विदित
है। पर घर को छोड़ कर पैसे निकालने में बड़ी मुश्किलें
हैं। यद्यपि घर में है क्या जो कोई लेगा। पर फिर
भी मैं वही चाहूँ जिसको उन्होंने बड़े शौक से
बनाया और मुझे सौंपा। जीते जी वो घर तक तो ही
रह गए। अस्पताल जाते वक्त भी मृत्यु से दो घंटे
पूर्व कहते गए मजूर न दुराना पुताई पूरी करा दो,
दावाजे बड़े गन्दे हैं सब में रंग कराऊंगा। यद्यपि
वो नहीं है पर उनकी आत्मा स्वर्ग ले भी मेरी रक्षा
करती है। मुनुवा भैया अपने आप की हम सान
बोहने हैं, जिनमें बीबी बहूवा की और मैं भैया की
दुलारी बुगली भाभी की थी। बहुत बचपन की
तो सिर्फ कमला बीबी बतती हैं की भाई कहते
पर पैदा हुई थी इसलिए तुम्हारा बड़ा अपना घर था
पर बाद की बात जानती हूँ कि हमेशा हावात में
है आदमी यही तुलना करता था कि बुगली

पुच्छी तुम बुरी पर ईश्वर की देन व्याह भी बँस
ही घरो में होगया। पर जब ले व्याह कर पदां
गई लाख ने और पति ने हमेशा सांभारवो
पर लिया और हर तरह तारीफ ही की बड़ी
सीधी बड़ी मेहनत बड़ी भाग्यवान इसादि
बताया, मैं भी सुनके फूली नहीं लगती थी
कभी कोई काम में वो आगे नहीं बढ़े, हमेशा
मुझसे ही कहा ये काम करना है जब मैं कह देती
थी अच्छा, तो संताप की सांस ले लेते थे। बड़े
बड़े आदमी के पास उठने बैठने या बड़े से बड़े काम
में मुझे आगे रखते थे। साल भर की बीमारी से
आते थे, अतः मैं भी उनसे बड़े गर्व ले कहती
थी मैंने ही तुम्हें नीम के नीचे ले लाकर। इस पक्के
मकान में बँठाया, तब हंसते थे। पर ईश्वर ने मेरे
गर्व को चूर कर दिया। जिसने मुझे इतना आदर
दिया और दिलाया, लखनऊ के जज मैजिस्ट्रेट
तक पैर धूते सब चाची कहते थे, उसने ही मुझे
बोखा देकर फिर गढ़े में गिरा दिया। किसी का
कोई काम होता बितादरी वालों का या बाहरवालों
का सीधे मेरे घर चले आते। भाया

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



पं. पद्मा कान्त जी मालवीय

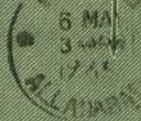
1. करि अम्मा तो उ

दोपदी चार

इलाहाबाद

← तीसरा पोंड Third fold →

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-



इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

साइत पढ़ने चाली से तीत रिवाज। जो काम हो
चाची चाचा को सौंप कर लोग निश्चिन्त
हो जाते थे। मुझसे कहते थे तुम भुनिसाँपें
लिखी हो मैं गवर में, मैं तो सिर्फें खुर
कर देता हूँ करती तो सब तुम्हीं हो। तिसपर
भी जब तो आपके बालो में भी भाभी हँलेकर
तभी मेरी नारीक करते थे। मुझको दिन पाँद है
जब मैंने अपनी सीता रात्री बनवा के भाँया को दिवापा
या भाँया ने खंगन में लड़े होकर कहा था सब लोग
देखलो मैंने तीन लड़कियाँ व्याही हैं जिसमें इसेही
लोग गरीब कहते थे पर इसे ही व्याह कर मैं
निश्चिन्त हुवा हूँ की ये सुख से खाली पड़
नती है। बाकी दोनों की मुझ चिन्ता है। जो
भी उनके बारे में हमेशा मुझ घाद जाती है मुझ
मेरे भाइयों ने हमेशा ही माना और मानते रहेंगे
पर जिसने ऊपर उठाया था मांग में सिन्दूर
देके उसीने सिन्दूर पोंद कर खंगल सूचक भी
बना दिया जब कहो जाऊँ। पर आपके यहाँ
के लिपे नहीं आपकी तो मैं दोली बीहन हूँ, अगर
किसी भीति हुई इतना कर सकी तो जल भाँरी
जुब जगह नहीं है फिर कभी शाहदा